उग्रवादी नेता (Extremist Leaders)

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लोकमान्य तिलक को भारतीय उग्र राष्ट्रवाद का जनक कहा जाता है। भारत में उग्रवादी राष्ट्रीयता का जन्म महाराष्ट्र में हुआ, जिसे तिलक ने नेतृत्व प्रदान किया। तिलक ने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की। वे अंग्रेजी सत्ता के घोर विरोधी थे। उनका कहना था कि "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे। उनकी विलक्षण बुद्धि, सुदृढ़ इच्छाशक्ति का आज भी राष्ट्र गुणगान करता है।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 1856 ई० में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका सार्वजनिक जीवन पूना के न्यू इंगलिश स्कूल (1880) के साथ प्रारंभ हुआ। उसी समय उन्होंने अपने मित्र आगरकर की सहायता से केसरी और मराठा नामक पत्रों का प्रकाशन शुरु किया। जिससे महाराष्ट्र को एक नवीन जागृति प्रदान की। आपत्तिजनक लेखों के प्रकाशन के आरोप पर तिलक को 101 दिन का कठोर कारावास भोगना पड़ा। इस घटना ने उनकी तथा समाचार पत्रों की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ा दी। 1890 ई० में तिलक 'दक्षिण शिक्षा समिति' से अलग होकर कांग्रेस में शामिल हो गए। उन्होंने उदार-वादी नीति का विरोध किया जिससे भारतीय राजनीति में उग्रवाद का जन्म हुआ।

महाराष्ट्र में राष्ट्रीय आन्दोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए नवयुवकों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्म बलिदान तथा उत्साह उत्पन्न करने के उद्देश्य से गोवध विरोधी समितियों, अखाड़ों और लाठी क्लबों की स्थापना की। 1893 में बड़ी धूम-धाम से महाराष्ट्र में गणपति उत्सव मनाया और नवयुवकों में एकता का पाठ पढ़ाया। 1895 ई० में शिवाजी उत्सव का आयोजन किया तथा महाराष्ट्र के लोगों में एकता स्थापित करने पर बल प्रदान किया। तथा देश से विदेशी सत्ता को भगाने का मूल-मंत्र दिया। इसी समय अकाल ने जनता में आक्रोश पैदा किया। अंग्रेज रैंड तथा एर्स्ट की हत्या हो गई, इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 18 माह का कठोर कारावास काटना पड़ा। जेल से छूटने पर जनता ने तिलक का बड़ा स्वागत किया जिससे प्रतिष्ठा और बढ़ गई तथा वे महाराष्ट्र में एकछत्र नेता बन गए तथा उग्र रूप धारण कर लिये।

1905 के बंगाल विभाजन में सहयोग कर सरकार की कटु आलोचना की तथा उग्रवादी गतिविधियों में तेजी आ गई। 1906 में उदारवादी तथा उग्रवादी में फूट होते-होते बची क्योंकि उग्रवादी तिलक को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे। 1907 के कांग्रेस अधिवेशन में तिलक और उनके साथियों को कांग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ा। सरकार लाभ उठाकर उग्रवाद को कुचलने के लिए दमनकारी कानूनों का निर्माण किया।

1908 ई० में तिलक को राजद्रोह के अपराध में 6 वर्ष का कारावास देकर मांडले जेल भेज दिया। जहाँ उन्होंने 'गीता रहस्य' तथा 'The arctic home of the

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

'Vedas' नामक ग्रंथों की रचना की। जेल से छूटने के बाद तिलक भारत लौटे। 1916 ई० में एनी बेसेंट द्वारा संचालित होम रूल आन्दोलन का समर्थन किया तथा सक्रिय सहयोग दिया। उदारवादियों तथा उग्रवादियों के बीच समझौता में तिलक अपने सहयोगियों सहित कांग्रेस में आ मिले तथा अंत समय तक कांग्रेस में ही रहे। महात्मा गाँधी को असहयोग आन्दोलन में सहयोग देने का उन्होंने वचन दिया था। 24 जुलाई 1920 को उनकी मृत्यु हो गई।

गाँधीजी लोकमान्य तिलक को 'आधुनिक भारत का निर्माता' कहा करते थे। उनके कार्यों, सेवाभाव तथा आदर्श उच्च कोटि का था। वे उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन के जन्मदाता थे। वे आन्दोलनकारी ही सिर्फ नहीं थे, वे राजनीतिक दार्शनिक भी थे। इनका विचारधारा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में एक नई जान फूंक दी। तिलक का विश्वास था कि भारत संसार का गुरु बन सकता है। सर वैलेंटाइन शिरोल (Sir Valentine Chirol) ने भारतीय अशांति (Indian Unrest) नामक पुस्तक में तिलक को 'भारतीय अशांति का जन्मदाता' (Father of Indian Unrest) कहा है। खतरनाक जनजागृति के अग्रदूत थे। भारतीयों ने उनके उच्च आदर्श त्याग बलिदान, योग्यता तथा बुद्धिमता के कारण लोकमान्य की पदवी से विभूषित किया। उनको ऐसे महान देशभक्त के रूप में देखा जो भारतीयों की दुर्दशा को देखकर रोता था और उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था – भारत के लिए 'स्वराज्य की प्राप्ति'।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी॰ के॰ कालेज, डुमराँव
दिनांक 05/08/2020